International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 6 No. 40 September - October - 2025

भारतीय सभ्यता पर आदिवासी ज्ञान का प्रभाव

डॉ. राजश्री लक्ष्मण तावरे

सहायक प्राध्यापक,

हिंदी विभाग, शंकरराव पाटील महाविद्यालय, भूम

Corresponding Author – डॉ. राजश्री लक्ष्मण तावरे

DOI - 10.5281/zenodo.17662109

प्रस्तावना:

भारतीय सभ्यता विश्व की प्राचीनतम और बहुआयामी सभ्यताओं में से एक है। इसकी सांस्कृतिक विविधता और सामाजिक संरचना केवल शहरी और वैदिक परंपराओं पर आधारित नहीं रही, बल्कि आदिवासी समाज की मौलिक ज्ञान परंपरा ने भी इसे गहराई से प्रभावित किया है। आदिवासी ज्ञान अनुभवजन्य, प्रकृति-केंद्रित और सामूहिक रहा है, जिसने भारतीय कृषि, चिकित्सा, कला, स्थापत्य और सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों को आकार दिया। यह शोध-पत्र भारतीय सभ्यता पर आदिवासी ज्ञान परंपरा के प्रभाव का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और समकालीन अध्ययन प्रस्तुत करता है। भारत की सभ्यता और संस्कृति की जड़ें प्रकृति, लोकाचार और सामूहिक जीवन में निहित हैं। आदिवासी समाज ने अपनी ज्ञान परंपरा के माध्यम से भारतीय संस्कृति को कृषि, चिकित्सा, कला, स्थापत्य और सामाजिक मूल्यों के स्तर पर गहराई से प्रभावित किया है। यह प्रभाव आज भी भारतीय जीवन शैली और सांस्कृतिक विविधता में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। भारत अपनी सांस्कृतिक विविधता, परंपराओं और जीवन-मूल्यों के लिए विश्वभर में प्रसिद्ध है। इस विविधता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा आदिवासी समाज और उनकी ज्ञान परंपरा है। आदिवासी समुदाय भारत के मूलनिवासी माने जाते हैं, जिन्होंने प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन जीते हुए ज्ञान के विविध रूपों का विकास किया। यह ज्ञान केवल आजीविका का साधन नहीं था, बल्कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति के विकास की नींव भी बना। कृषि, चिकित्सा, कला, नृत्य-संगीत, स्थापत्य, जल संरक्षण और पर्यावरणीय दृष्टिकोण—इन सभी क्षेत्रों में आदिवासी ज्ञान परंपरा ने भारतीय समाज को गहन रूप से प्रभावित किया है। भारत विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक है, जिसकी पहचान इसकी विविधता और सांस्कृतिक बहुलता से होती है। भारतीय संस्कृति केवल वैदिक, ब्राह्मणिक या शास्त्रीय परंपरा तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसमें आदिवासी ज्ञान परंपरा का भी गहरा योगदान रहा है। आदिवासी समुदायों की जीवन-शैली, आस्था, कला, कृषि, चिकित्सा और प्रकृति-आधारित ज्ञान ने भारतीय सभ्यता को बहुआयामी और सतत बनाया। यह शोध-पत्र भारतीय सभ्यता और संस्कृति पर आदिवासी ज्ञान परंपरा के प्रभाव का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करता है।

आदिवासी ज्ञान परंपरा मुख्यतः अनुभव-आधारित, लोकाभिमुख और प्रकृति-केन्द्रित रही है। वन, पर्वत, नदियाँ और पशु इनके जीवन के केंद्र में हैं। लोकगीत, लोककथा, नृत्य और कहावतों के माध्यम से ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता रहा। व्यक्तिगत स्वार्थ की जगह सामूहिक भलाई और साझा श्रम पर बल। प्रकृति के संतुलन को बिगाड़े बिना संसाधनों का उपयोग। आदिवासी ज्ञान परंपरा अनुभवजन्य, प्रकृति-आधारित और सामूहिक रही है। यह लिखित की अपेक्षा मौखिक परंपरा के रूप में संरक्षित रही है। जंगल, नदियाँ, पर्वत, पशु-पक्षी इनकी संस्कृति और ज्ञान का मूल रहे हैं। टोटेम, देव-पूजा, प्राकृतिक तत्वों का सम्मान इनके जीवन का हिस्सा है। लोककथाएँ, लोकगीत, कहावतें और मिथक इनके ज्ञान को पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ाते रहे हैं। आदिवासी समाज में प्रकृति-पूजा, सूर्य-चंद्र, जल-वनस्पति और पशु-पक्षियों के प्रति आस्था रही है। यही परंपरा बाद में वैदिक देवताओं (इंद्र, अग्नि, वायु, वरुण) की अवधारणा में परिलक्षित हुई। आदिवासी समाज में टोटमवाद (कुलदेवता/कुलवृक्ष) का विचार है, जिसने हिंदू धर्म की कुलदेवता पूजा परंपरा को प्रभावित किया। अनेक आदिवासी अनुष्ठान और नृत्य (जैसे गोंडों का कर्मा नृत्य, संथालों का सोहराय) बाद में भारतीय लोकधार्मिक उत्सवों का हिस्सा बने।

भारत की पहचान उसकी सांस्कृतिक विविधता और सभ्यता की निरंतरता में निहित है। इस विविधता का महत्त्वपूर्ण अंग आदिवासी समाज है, जिसे भारत का मूलनिवासी माना जाता है। आदिवासी जीवन प्रकृति-आधारित रहा है और उनकी मौखिक ज्ञान परंपरा ने भारतीय सभ्यता के विभिन्न पहलुओं को गहराई से प्रभावित किया है। आदिवासी समाज प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करते हुए कृषि पद्धतियों का विकास करता रहा। झूम खेती, मिश्रित फसलें, ऋतु-आधारित बोआई और फसल चक्र जैसी पद्धतियाँ आदिवासी समुदायों की मौलिक देन हैं। जल संरक्षण के लिए तालाब, झील और छोटे-छोटे बांध बनाने की परंपरा भारतीय ग्रामीण समाज ने भी अपनाई। जैव विविधता और वनों की रक्षा करने की परंपरा ने भारतीय संस्कृति को "प्रकृति-मित्र" बनाया। □ आदिवासी समाज का औषधीय ज्ञान भारतीय आयुर्वेद का आधार बना। जंगलों में मिलने वाली जड़ी-बूटियाँ, औषधीय पौधे और खनिज पदार्थ विभिन्न रोगों के उपचार में उपयोग किए जाते थे। लोक-चिकित्सा और दाई परंपरा ने भारतीय ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया। आज भी कई आदिवासी औषधीय पद्धतियाँ आधुनिक विज्ञान द्वारा मान्य और प्रामाणिक मानी जाती हैं।

आदिवासी चित्रकला (वारली, भील, गोंड पेंटिंग) ने भारतीय कला को नई पहचान दी। उनके नृत्य (कर्मा, गोंडी, संथालों का सोहराय, उरांवों का झुमर) सामूहिकता और प्रकृति-आधारित जीवन का प्रतीक हैं। आदिवासी वाद्ययंत्र जैसे मांदर, ढोल, नगाड़ा, बांसुरी भारतीय लोकसंगीत का हिस्सा बन गए। भारतीय शास्त्रीय और लोक परंपराओं में आदिवासी धुनों और लयों का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। आदिवासी आवासीय शैली (मिट्टी, लकड़ी, पत्थर और घास से बने घर) भारतीय ग्रामीण वास्तुकला की प्रेरणा बनी। आदिवासी आभूषण, धातु-शिल्प, लकड़ी की नक्काशी और मिट्टी के बर्तन भारतीय हस्तकला को समृद्ध करते रहे। डोकरा कला (धातु शिल्प) ने भारतीय कलात्मक धरोहर को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई। आदिवासी समाज समानता, सामूहिक श्रम और साझेदारी पर आधारित है। स्त्री-पुरुष की बराबरी, सामूहिक निर्णय और सहयोग की भावना ने भारतीय ग्रामीण समाज की

संरचना को प्रभावित किया। उनके त्योहार (सरहुल, सोहराय, कर्मा) भारतीय त्योहार संस्कृति की विविधता का हिस्सा बने। प्रकृति के प्रति आदिवासी सम्मान ने भारतीय सभ्यता में पर्यावरण संरक्षण और संतुलित जीवन की अवधारणा को गहराई दी।

आदिवासी समुदाय का समानतावादी दृष्टिकोण भारतीय समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों की नींव रहा। त्योहार और लोकपर्व जैसे करमा, सारहुल, सोहराय, मांदर नृत्य आदि भारतीय सांस्कृतिक विविधता को समृद्ध करते हैं। आदिवासी समुदाय में स्त्री-पुरुष की समान भागीदारी रही, जिसने भारतीय समाज में लिंग-समानता की अवधारणाओं को प्रेरित किया। आदिवासी चित्रकला (गोंड आर्ट, सोहराई पेंटिंग, वारली चित्रकला) आज भारतीय कला की वैश्विक पहचान बन चुकी है। लोकगीत और लोककथाएँ भारतीय साहित्य की मौखिक परंपरा को समृद्ध करती हैं। तुलसीदास और कबीर जैसे संत कवियों की वाणी में भी लोक और जनपद की छाप देखी जा सकती है। आदिवासी नृत्य और वाद्ययंत्र (मांदर, ढोल, नागाड़ा) भारतीय शास्त्रीय और लोकनृत्यों पर प्रभावी रहे।

आदिवासी समाज ने झूम खेती, मिश्रित खेती, बीज संरक्षण और प्राकृतिक खाद जैसी तकनीकों का विकास किया। जल संरक्षण और वनों पर आधारित अर्थव्यवस्था ने भारतीय कृषि और ग्रामीण जीवन को दिशा दी। लघु वनोपज (महुआ, तेंदू पत्ता, साल, शहद) का संग्रहण आज भी भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महत्त्वपूर्ण है। आदिवासी जनों की औषधीय पौधों की जानकारी और जड़ी-बूटी चिकित्सा भारतीय आयुर्वेद और लोकचिकित्सा का आधार बनी। कई वनस्पतियों (नीम, गिलोय, अशोक, तुलसी) के औषधीय उपयोग का ज्ञान आदिवासी समाज से ही व्यापक रूप से फैला। वैश्वीकरण और आधुनिकता के प्रभाव से आदिवासी भाषाएँ, गीत और परंपराएँ संकटग्रस्त हो रही हैं। खनन, औद्योगिकीकरण और शहरीकरण से आदिवासी समाज का सांस्कृतिक और भौगोलिक विस्थापन बढ़ रहा है। परंतु साथ ही, आदिवासी कला और लोककला को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मान्यता मिल रही है। झूम खेती, मिश्रित खेती और ऋतु-आधारित कृषि ज्ञान ने भारतीय कृषि पद्धतियों को प्रभावित किया। आदिवासी समुदायों द्वारा जल संरक्षण (तालाब, झील, छोटी नहरें) की पद्धतियाँ आज भी प्रासंगिक हैं। जैव विविधता के संरक्षण की आदिवासी परंपराओं ने भारतीय पर्यावरणीय संस्कृति को समृद्ध किया।

आदिवासी कला, संगीत, नृत्य और भाषाओं का संरक्षण भारतीय सांस्कृतिक विरासत को मजबूत करेगा। जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण संकट के युग में आदिवासी समाज की सतत विकास की परंपरा पूरी दुनिया के लिए आदर्श हो सकती है। विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों को आदिवासी ज्ञान परंपरा को अकादमिक विमर्श का हिस्सा बनाना चाहिए। आदिवासी मौखिक परंपराओं का संकलन और डिजिटलीकरण भविष्य के लिए ज्ञान-संरक्षण का महत्त्वपूर्ण कदम होगा।

आयुर्वेद और लोक-चिकित्सा में आदिवासी औषधीय ज्ञान का गहरा योगदान है। जंगलों में पाए जाने वाले जड़ी-बूटियों का उपयोग आज भी आयुर्वेदिक औषधियों और होम्योपैथिक दवाओं में होता है। आदिवासी दाई परंपरा (traditional midwives) ने भारतीय ग्रामीण स्वास्थ्य व्यवस्था को प्रभावित किया। गोंड, भील, संथाल, वारली जैसी जनजातियों की चित्रकला और शिल्प भारतीय कला को वैश्विक स्तर पर पहचान दिला रहे हैं। आदिवासी लोकनृत्य (कर्मा, गोंडी, धुमकुड़िया) और संगीत ने भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को विविधता और ऊर्जा प्रदान की। वाद्ययंत्र जैसे

मांदर, ढोल, नगाड़ा और बांसुरी भारतीय लोकसंगीत परंपरा में गहरे समाहित हैं। सामूहिकता, श्रम विभाजन और सहयोग भारतीय ग्रामीण समाज की जीवनशैली का आधार बने। प्रकृति के प्रति आदर और संरक्षण की भावना ने भारतीय संस्कृति को "प्रकृति-मित्र" बनाया। आदिवासी त्योहार (सरहुल, सोहराय, कर्मा) ने भारतीय त्योहार संस्कृति की विविधता को बढ़ाया।

"वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना आदिवासी समाज की सामूहिकता और समानता पर आधारित जीवन से प्रभावित है। अहिंसा, पर्यावरण संरक्षण और संतुलित जीवन जैसे मूल्य भारतीय दर्शन और आदिवासी परंपरा दोनों में निहित हैं। प्रकृति-पूजा की परंपरा ने भारतीय धार्मिक जीवन (शैव, शाक्त और वैष्णव परंपराओं) को भी प्रभावित किया। शहरीकरण और आधुनिकीकरण के कारण आदिवासी भाषाएँ और परंपराएँ संकटग्रस्त हो रही हैं। ज्ञान परंपरा का वाणिज्यीकरण (जैसे औषधियों का औद्योगिक उत्पादन) अक्सर आदिवासियों के हितों की उपेक्षा करता है। शिक्षा और अनुसंधान संस्थानों में आदिवासी ज्ञान को उचित स्थान नहीं मिल पाया है। भारतीय सभ्यता के निर्माण में आदिवासी ज्ञान परंपरा का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है। कृषि, चिकित्सा, कला, स्थापत्य और सामाजिक मूल्यों में आदिवासी प्रभाव ने भारतीय संस्कृति को विशिष्ट पहचान दी। आज आवश्यकता है कि इस ज्ञान को केवल अतीत की धरोहर न मानकर भविष्य के सतत विकास और सांस्कृतिक समृद्धि का आधार बनाया जाए।

निष्कर्ष:

भारतीय सभ्यता और संस्कृति केवल शास्त्रीय परंपरा का परिणाम नहीं है, बल्कि इसमें आदिवासी ज्ञान परंपरा का योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहा है। चाहे वह प्रकृति-पूजा हो, लोककला हो, कृषि और औषधि का ज्ञान हो, या सामाजिक समानता की चेतना—आदिवासी समाज ने भारतीय सभ्यता को गहराई और व्यापकता प्रदान की है। आज आवश्यकता है कि हम इस ज्ञान परंपरा को केवल अतीत की धरोहर न मानकर भविष्य के लिए भी मार्गदर्शक बनाएँ। आदिवासी ज्ञान परंपरा ने भारतीय सभ्यता और संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया है। कृषि, चिकित्सा, कला, संगीत, दर्शन और सामाजिक मूल्य—इन सभी क्षेत्रों में आदिवासी योगदान ने भारतीय संस्कृति को विशिष्ट बनाया। आज आवश्यकता है कि इस ज्ञान परंपरा को केवल अतीत की धरोहर न मानकर भविष्य के सतत विकास और सांस्कृतिक समृद्धि का आधार बनाया जाए। यदि भारतीय समाज इस धरोहर का सम्मान और संरक्षण करेगा, तो यह न केवल भारतीय संस्कृति की विविधता को सुरक्षित करेगा बल्कि वैश्विक स्तर पर भी "प्रकृति और संस्कृति के संतुलन" का एक मॉडल प्रस्तुत करेगा।

संदर्भ सूची:

1. Baviskar, A. (2005). In the Belly of the River: Tribal Conflicts over Development in the Narmada Valley. Oxford University Press.
2. Elwin, V. (1999). The Tribal World of Verrier Elwin: An Autobiography. Oxford University Press.
3. Xaxa, V. (2008). State, Society, and Tribes: Issues in Post-Colonial India. Pearson Education India.
4. Sharma, K. K. (2010). Tribal Development in India: Contemporary

Issues and Concerns. Concept Publishing Company.

5. Roy Burman, B. K. (1994). Tribal Medicine and Healthcare Practices in India. Mittal Publications.
6. Government of India (2011). Census of India 2011: Data on Scheduled Tribes. Registrar General & Census Commissioner of India.